''हिन्दी भाषा शैली और वाल्ट व्हीटमैन के काव्य में समानता''

डॉ॰ ज्योत्स्ना

सहायक प्रोफेसर,

किशन लाल पब्लिक कॉलेज,

रेवाड़ी (हरियाणा)।

कविता कवि की विचार प्रक्रिया के विकास बिन्दुओं को दर्शाती है। वहीं कवि की विचार प्रक्रिया परस्पर विरोधी धरातलों से होकर आगे बढ़ती है। कवि एक साथ आस्तिक भी होता है, नास्तिक भी होता है। वह स्वार्थी भी होता है दूसरी तरफ निःस्वार्थ से भरा भी होता है। क्रान्तिकारी वह तब होता है, जब वह सामाजिक न्याय की मांग करता है। शान्ति का संदेश वह तब देता है जब उसे, मानव समुदाय पर विपत्ति की आशंका होती है। विचारशील वह तब होता है ज बवह विचार प्रक्रिया को शब्दों द्वारा मूर्त्तता प्रदान कर रहा होता है। आस्तिक वह तब होता है जब वह ईश्वर की बात कर रहा होता है। नास्तिक वह तब होता है जब वह मनुष्य को ईश्वर से श्रेष्ठ देखता है। स्वार्थी वह तब होता है, जब वह केवल अपने देश के हित और उसकी सुरक्षा, उसके विकास के बारे में सोचता है। विरोधी विचारों के समुच्चय के संघर्षण से जो बनता है वह कवि होता है। ऐसे ही अपने समय के दो महान कवि हैं, वॉल्ट व्हिटमैन और निराला। महान कवि कालजयी होता है। यह नयापन ही, महान कवि व कविता का लक्षण उसे वर्षों बाद भी जीवित रखता है। कवि जितना दक्ष होता है, वह अपनी रचनाओं में उतना ही नयापन भरता है। दोनों कवियों की रचनाओं के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि, 'मुक्त छन्द' का प्रयोग इसी शिल्पगत नवीनता की ओर एक सार्थक प्रयास है। निराला और वॉल्ट व्हिटमैन संवेदनशील कवि हैं। दुखी, पीड़ित, शोषित जनों की पीड़ एवं दुःख उनकी पीड़ा और दुःख बन जाते हैं। दोनों कवियों ने समाज के शोषित, पीड़ित व उपेक्षित सर्वहारा वर्ग के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की है।

''गरीब के प्रति'' कविता में वॉल्ट व्हिटमैन लिखते हैं कि,

''मेरी जगह तुम लोगों के बीच में है,
ऐसा नहीं है कि मैंने गरीब होने को प्राथमिकता दी है –
अमीर बनने की अपेक्षा?
धनवान बनने के रास्ते मेरे लिए खुले हैं,
परन्तु मैंने उन्हें नहीं चुना
मैंने तुम्हारे साथ रहने का चुनाव किया है।''[1]

वॉल्ट व्हिटमैन बेबाकी के साथ यह प्रश्न करते हैं कि,

''क्या तुमने कभी नारी के शरीर से प्रेम किया है,
क्या तुमने कभी पुरुष के शरीर से प्रेम किया है?[2]

निराला ने प्रेम व प्रकृति का आलम्बन लेकर स्त्री व पुरुष के प्रथम मिलन पर, सुन्दर पंक्तियाँ लिखी हैं।

''आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,

आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,

आई याद कान्ता की कम्पित कमनीय गात।''[3]

निराला ने अपनी मुक्तछन्द की कविताओं में 'प्रेम' और 'सौन्दर्य' जैसे कोमल विषय को बहुत ही दक्षता व संतुलन के साथ अभिव्यक्त किया है।

''बन्द कंचुकी के सब खोल दिए प्यार से

यौवन–उभर ने पल्लव–पर्यट पर सोती शेफालिके।

मूक–आह्वान भरे लालसी कपोलों के

व्याकुल विकास पर

झरते हैं शिशिर से चुम्बन गगन के।''[4]

निराला सहज भाषा में लिखी कविता को मन का सहज प्रकाशन मानता है–

''सहज भाषा में

समझाती थी ऊंचे तत्व

अलंकार–लेश–रहित, श्लेष–हीन,

शून्य विशेषणों से–––

नग्न–नीलिमा–सी व्यक्त

भाषा सुरक्षित वहाँ वेदों में आज भी ––

मुक्त छन्द,

सहज प्रकाशन वह मन का ––''[5]

वॉल्ट व्हिटमैन की कुछ एक महत्त्वपूर्ण कविताओं में, हिन्दू दर्शन का प्रभाव मिलता है। वॉल्ट व्हिटमैन सर्वेश्वरवादी थे। वे सभी धर्मों व शास्त्रों में आस्था रखते थे। वे भगवद्गीता से प्रभावित थे और यह प्रभाव उन्होंने इमर्सन और थॉरो से ग्रहण किया था। उनकी कविताओं में पाई जाने वाली 'रहस्य भावना' का स्रोत, भारतीय वेद, उपनिषद् व भगवद्गीता में निहित है, यह माना जाता है।

''मैं विश्व भर में फैले पुजारियों को कभी तुच्छ नहीं समझता हूँ। मेरी आस्था, आस्था के चरम बिन्दु को भी छूती है साथ ही आस्था के न्यून बिन्दुओं को भी छूती है। मेरी यह आस्था पुरानी और नई सभी प्रकार की पूजा पद्धतियों को एक साथ लेकर चलती है। विश्वास करो, इस पृथ्वी पर पाँच हजार वर्षों के बाद फिर आऊंगा। देववाणी की प्रतीक्षा करता हुआ, ईश्वर का सम्मान करता हुआ सूर्य को नमस्कार करता हुआ.....मैं बौद्ध लामाओं और ब्राह्मणों को ईश्वर के सम्मुख दीपक जलाने में मदद करूंगा।.....मैं, खोपड़ी में रखी मदिरा के सेवन करूंगा, मैं, शास्त्रों से लेकर वेदों का प्रशंसक हूँ, मैं कुरान का भी महत्व मानता हूँ।''[6]

''मैं मनुष्यों से कहता हूँ कि, कभी भी ईश्वर के प्रति उत्सुक न बनो, मुझे देखो, जो प्रत्येक वस्तु के प्रति इतना उत्सुक रहता हूँ, मै। ईश्वर के प्रति बिल्कुल जिज्ञासु नहीं हूँ। (मेरे पास शब्द नहीं है कि मैं बताऊं कि दो चीजों के प्रति मैं बिल्कुल जिज्ञासु नहीं हूँ एक ईश्वर दूसरा मृत्यु)। मैं प्रत्येक वस्तु में ईश्वर का वास देखता हूँ। ईश्वर को इससे कम में, मैं नहीं आंकता। न ही मुझे यह समझ में आता है कि, मेरे बराबर कौन खुशनसीब है, क्यों मैं ईश्वर को इस दिन से ज्यादा बेहतर रूप में देखता चाहूं जब मैं चौबीस घण्टों में प्रत्येक घण्टे ईश्वर को देखता हूं प्रत्येक क्षण उसे देखता हूँ। स्त्री व पुरुष के चेहरों में मुझे ईश्वर दिखाई देता है। मेरे स्वयं के चेहरे में भी जब मैं शीशे में अपना चेहरा देखता हूँ।''[7]

वॉल्ट व्हिटमैन एवं निराला दोनों आस्तिक हैं। वॉल्ट व्हिटमैन का ईश्वर निर्गुण निराकार है वहीं निराला का सगुण साकार। निराला की कविताओं में भी रहस्य भावना का स्वर मिलता है। 'नारायण मिले हंस अंत में', व अंधिवास' कविताएं रहस्य भावना को लेकर लिखी गई हैं। निराला और वॉल्ट व्हिटमैन दोनों कवियों की कविताओं में विश्व मानवता के लिए अतिरिक्त संवेदना का भी स्वर मिलता है। वॉल्ट व्हिटमैन और निराला दोनों के व्यक्तित्व में 'अहम' का प्राबल्य है। दोनों कवियों में इस बिन्दु पर भी समानता पाई जाती है कि, उनका अहम् कभी–कभी उनके पूरे व्यक्तित्व से बड़ा आकार लेकर खड़ा हो जाता है। निराला और वॉल्ट व्हिटमैन एक साथ अहम्वादी व व्यक्तिवादी कवि हैं। दोनों की कविताओं में कवि का 'मैं' एक मुख्य भूमिका निभाता है कभी प्रत्यक्ष रूप में व कभी परोक्ष रूप में। निराला जहाँ लिखते हैं कि,

''मैंने मैं शैली अपनायी,

देखा दुखी एक निज भाई

दुख की छाया पड़ी हृदय में मेरे,'' [8]

वॉल्ट व्हिटमैन को एक साथ, 'प्रेम', व 'प्रजातंत्र' का कवि कहा जाता है। मृत्यु का बोध, दोनों कवियों को सम्मोहित करता है।

''ऐसे भी लोग हैं, जो केवल शान्ति और सुरक्षा का सुन्दर पाठ पढ़ायेंगे, परन्तु मैं जिनसे प्रेम करता हूं उन्हें, 'युद्ध' और 'मृत्यु' का पाठ पढ़ाता हूँ क्योंकि ये जब भी आते हैं, अधिकार पूर्वक आते हैं।''[9]

निराला का 'अहम' यहाँ पर मृत्यु को चुनौती देता हुआ लगता है। निराला भी मृत्यु को ललकारते हुए लिखते हैं,

''एक बार बस और नाच तू श्यामा!

समान सभी तैयार,

कितने ही हं असुर, चाहिए कितने तुझको हार?

कर–मेखला मुण्ड–मालाओं से बन मन–अभिरामा –

एक बार बस और नाच तू श्यामा!'' [10]

निराला और वॉल्ट व्हिटमैन की कविताओं में शिल्प के स्तर पर जो महत्वपूर्ण समानता मिलती है वह है – 'मुक्त छन्द का प्रयोग'। दोनों कवियों की कविताओं में, मुक्त छन्द की प्रकृतिगत समानता नहीं मिलती है हाँ, प्रयोगगत समानता अवश्य मिलती है। इसके पिछे हिन्दी व अंग्रेजी का बुनियादी व्याकरणिक भेद महत्वपूर्ण कारण है। ''रवीन्द्रनाथ ने कहा है और बहुत ठीक कहा है, 'भाव पेते जाए रूपेर माझारे अंग'। भाव अपने अनुकूल रूप विधान में मूर्त्त होना चाहता है।''[11] दोनों कवि मुक्त छन्द का प्रयोग एक निश्चित व व्यापक उद्देश्य के तहत करते हैं। यह उद्देश्य है – 'मुक्ति की परिकल्पना।' दोनों कवियों के सन्दर्भ में

'मुक्ति की परिकल्पना' के दो अलग–अलग अभिप्राय हैं। निराला की कविताओं में यह परिकल्पना, सिर्फ छन्दों के अनुशासन से मुक्ति का प्रयास न होकर, सम्पूर्ण मानव जाति की मुक्ति से जुड़ी चेतना है।

''मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग हो जाना।''[12] वहीं, वॉल्ट व्हिटमैन की कविताओं में, 'मुक्ति की परिकल्पना' से अभिप्राय अपने देश की सांस्कृतिक आत्मा की मुक्ति से है। भाषा, साहित्य, कला व संगीत, देश की सांस्कृतिक आत्मा के अंग होते हैं। वॉल्ट व्हिटमैन ने, अमेरीका में जो छन्दानुशासन चल रहा था, उसे विजातीय बतलाया व छन्द की परम्परागत रूढ़ियों के प्रति विद्रोह किया व भाषा को ब्रिटिश उपनिवेशवाद के संस्कारों से मुक्त किया। वॉल्ट व्हिटमैन ने ऐसी भाषा का व्यवहार किया जो शुद्ध रूप से अमरीकी राष्ट्रीय चरित्र को उभार सके।

''मैंने सुना है कि, इस नए विश्व में एक पहेली को हल करने के लिए तुम उत्सुक हो। साथ ही अमेरीका की परिभाषा और उसकी प्रतियोगी प्रतिस्पर्द्धापूर्ण प्रजातन्त्र को भी। इसलिए मैं तुम्हें अपनी कवितायें भेजता हूं, ताकि तुम उसमें वह सब कुछ पा सको जो तुम चाहते हो।''[13] वॉल्ट व्हिटमैन अपनी राष्ट्रभाषा को, 'एलिजाबेथ युग' के भाषा संस्कारों से मुक्त कर उसे शुद्ध रूप से 'अमरीकी' बनाना चाहते थे। राष्ट्रभाषा कैसी है, इस पर वि लिखते हैं, ''भाषा जो बाकी सब कुछ नियन्त्रित करती है, वह भाषा अद्‌भुत है, यह अंग्रेजी भाषा भी विस्मयकारी है जो मुनष्यों की भाषा है, यह भाषा सबको जोड़ती है इसके अन्दर अवरोधक क्षमता है, यह भाषा एक साथ गर्व करने लायक है, महत्वाकांक्षी लोगों की भाषा है। यह भाषा एक साथ, वृद्धि, आस्था, हिम्मत, न्याय, मित्रता दुश्मनी, व्यापक, निर्णय, आत्मविश्वास, व विवके की भाषा है। यह भाषा, जो कुछ भी नहीं अभिव्यक्त है उसे बहुत अच्छे प्रकार से अभिव्यक्त करती है। यह भाषा, आधुनिक युग के लिए है, यह भाषा अमेरिका के लिए है।''[14]

निराला के रचनाकाल के उन्मेष काल में भारत पराधीन था। भारत की पराधीनता कवि की मुख्य चिन्ता थी। निराला को, 'जागो फिर एक बार', 'बादल राग', 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'स्वाधीनता पर', 'दिल्ली' आदि कविताओं में इसी 'मुक्ति चेतना' का स्वर मिलता है।

''समझा मैं,
भय ही व्यवस्था का जनक है,
निर्भय अपने को
और दुर्बल समाज को
करके दिखाना है ––
'स्वाधीन' का ही
एक और अर्थ 'निर्भय' है।''[15]

दोनों कवि, मुक्त छन्द का आदि स्रोत वेदों, उपनिषदों व 'बाइबिल' में निहित बताते हैं दोनों कवि, मुक्त छन्द के पक्ष को एक प्रकार के तर्कों से पुष्ट करते हैं।

''सहज भाषा में
समझाती थी ऊंचे तत्व
अलंकार–लेश–रहित, श्लेष–हीन,

शून्य विशेषणों से ––

नग्न–नीलिमा–सी व्यक्त

भाषा सुरक्षित वह वेदों में आज भी ––

मुक्त छन्द।''[16]

वॉल्ट व्हिटमैन और निराला दोनों कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से यह साबित कर दिया कि, कलम, अस्त्र से ज्यादा ताकतवर है और कविता सबसे प्रभावशाली विधा है। निराला, 'बादल राग' कविता में जहाँ क्रान्ति का आह्वान करते हैं वहीं व्हिटमैन दासों की मुक्ति का आह्वान करते हैं –

''जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर

तुझे बुलाता कृषक अधीर,

ऐ विप्लव के वीर!

चूस लिया है उसका सार,

हाड़ मात्र ही है आधार,

ऐ जीवन के पारावार !'' [17]

वॉल्ट व्हिटमैन, ''दास–प्रथा को एक बर्बरतापूर्ण, यंत्रणापूर्ण षउ्यन्त्र बताता है''[18] और 'दास उन्मूलन को राष्ट्र के अन्य मुद्दों से ऊपर रखना चाहता है। वर्डसवर्थ के अनुसार, ''काव्य प्रबल भावों का सहज उत्छलन है।''[19] जो कुछ भी कहना चाहते हैं, उसे बिना किसी अवरोध के लिख रहे हैं। वह सोचने व विचारने की प्रक्रिया में कविता के प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट नहीं कर रहे हैं। भावों का यह उतार चढ़ाव दोनों कवियों की कविताओं में मिलता है। यही कारण है कि, आलोचकों ने वॉल्ट व्हिटमैन के मुक्तछन्दों को 'टाइडल राइम' की संज्ञा दी है जिस प्रकार, समुद्र में ज्वार–भाटा आता है वॉल्ट व्हिटमैन की कविताओं में भी भाव इसी रूप में उठते हैं। वॉल्ट व्हिटमैन की कविताओं के लक्षण निराला की मुक्त छन्द की कविताओं में भी पाये जाते हैं।

कल्लव–पल्लव को हिला हरित बह गयी वायु,

लहरों में कम्प और लेकर उत्सुक सरिता

तैरी, देखती तमश्चरिता

छवि बेला की नभ की ताराएं निरूपमिता,

शत–नयन–दृष्टि

विस्मय में भरकर रही विविध–आलोक–सृष्टि।''[20]

वॉल्ट व्हिटमैन और निराला दोनों की कविताओं में मिथक का प्रयोग मिलता है। वॉल्ट व्हिटमैन कथ्य और रूप दोनों दृष्टियों से आधुनिक कवि थे। वॉल्ट व्हिटमैन ने अपनी कविताओं में पुराने मिथकों को नए रूप में रूपान्तरित कर पेश किया।

''ये मिथक भव्य हैं– मुझे इन्हें सुनकर प्रसन्नता होती है। ये आदम और हव्वा भव्य हैं – मैं जब पीछे की ओर देखता हूँ तो स्वीकार करता हूँ। ये राष्ट्रों के उत्कर्ष व अपकर्ष भी भव्य हैं– इन राष्ट्रों के

कवि महान हैं, स्त्रियाँ, महात्मा, आविष्कर्त्ता, शासन कर्त्ता, सेना नायक, पुजारी सभी महान हैं। यह स्वतन्त्रता भव्य है। यह समानता भव्य है। मैं इनका अनुगामी हूँ, ये राष्ट्र की बागडोर सम्हालने वाले लोग, अपनी–अपनी नाव तैयार कर लो, जिसे मैं भी खेऊं तुम भी खेवो, तुम्हारे हाथ में जीवन है मृत्यु है – तुम्हारे पास पूरा विज्ञान है – मुझे तुममें पूरी आस्था है।'' कविता का यह प्रथम बंध यह दिखाता है कि किस प्रकार कवि पुराने मिथकों से हटकर आधुनिकता व यथार्थ को अपना रहा है। रिचर्ड एम. बक का मानना है कि ''वॉल्ट व्हिटमैन पौराणिक आख्यायिकाओं इजिप्ट, ग्रीक या रोम की पौराणिक कथाओं से दृष्टान्त का सहारा नहीं लेते हैं।''[21]वॉल्ट व्हिटमैन और निराला दोनों कवि छन्द की महत्ता को पूरी तरह नहीं नकारते हैं। वॉल्ट व्हिटमैन एक ओर 'लीव्स ऑफ ग्रॉस की भूमिका में छन्द के सौन्दर्य को स्वीकार करते हैं, वहीं निराला छन्द के अनुशासन से गुजर कर 'मुक्त छन्द' की कवितायें लिखते हैं। वॉल्ट व्हिटमैन परम्परागत कविता की छन्दोबद्ध परम्परा को पूरी तरह नहीं नकारते हैं। उन्होंने अपनी कविता में जगह–जगह पर कविता के पारम्परिक उपकरणों का जैसे, स्वर–सादृश्य, अनुप्रास, बन्ध, टेक, पुनरावृत्ति व तुक का भावों के आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है वहीं निराला के अनुसार, ''मुक्त छन्द तो वह है जो छन्द की भूमि में रहकर भी मुक्त है। निराला के अनुसार मुक्त काव्य की सफलता भी कवित्त छन्द पर ही आधारित है।

वॉल्ट व्हिटमैन और निराला दोनों की मुक्त छन्द की कविताओं में स्वच्छन्दतावादी, मानवतावादी, रहस्यवादी व अस्तित्ववादी प्रवृत्तियां मिलती हैं। वॉल्ट व्हिटमैन और निराला की कविताओं में भाव–साम्य तो मिलता ही है, साथ ही मुक्त छन्द का सफलता पूर्वक प्रयोग भी एक महत्वपूर्ण समानता है। यहद निराला को हम हिन्दी साहित्य का 'छन्दोगुरु' मानते हैं तो वॉल्ट व्हिटमैन को अंग्रेजी साहित्य का 'छन्दोगुरु' मानना अतिश्योक्ति नहीं होगी। अलग–अलग परिवेश, संस्कृति सम्बन्ध रखने के बावजूद निराला तथा व्हिटमैन के काव्य में हिन्दी भाषा के स्तर अनेक समानताएँ पाई जाती हैं जिससे यह बात मुखर होती है कि हिन्दी भाषा का अस्तित्व सीमाओं का मोहताज नहीं है तथा लगातार अपनी पहचान विश्व स्तर पर मजबूत करता जा रहा है।

सन्दर्भ :

1. लीव्स ऑफ ग्रॉस, सम्पादक स्कूल ब्रैडले एवं एरॉल्ड डब्ल्यू बॉल्ज़ट, पृ. 677
2. लीव्स ऑफ ग्रॉस, संस्करण, 1891–92, पृ. 82
3. परिमल, पृ. 171
4. वही, पृ. 175
5. परिमल सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, पृ. 241
6. नये पत्ते, सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला', पृ. 44
7. लीव्स ऑफ ग्रॉस, वॉल्ट व्हिटमैन, पृ. 86–87
8. राग–विहाग सम्पादक, रामविलास शर्मा, पृ. 62
9. लीव्स ऑफ ग्रॉस, वॉल्ट व्हिटमैन, पृ. 614
10. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग–2, पृ. 815
11. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन, समकालीन कविता में छन्द, 'अज्ञेय' पृ. 21
12. सं0 नन्द किशोर नवल, निराल रचनावली, भाग–1, पृ. 401
13. लीव्स ऑफ ग्रॉस, वॉल्ट व्हिटमैन, पृ. 3
14. लीव्स ऑफ ग्रॉस, वॉल्ट व्हिटमैन, पृ. 630
15. सं0 नन्द किशोर नवल, निराल रचनावली, भाग–1, पृ. 133
16. सं0 नन्द किशोर नवल, निराल रचनावली, भाग–1, पृ. 240–241

17. सं0 रामविलास शर्मा, राग–विहाग, पृ. 56
18. लीव्स ऑफ ग्रॉस, संस्करण 1891–92, पृ. 273
19. देवेन्द्र नाथ शर्मा, पाश्चात्य काव्य शास्त्र, पृ. 111
20. सं0 नन्द किशोर नवल, निराल रचनावली, भाग–1, पृ. 349
21. वॉल्ट व्हिटमैन, हैण्डबुक, गेविल्सन एलन, पृ. 141